781. Wegen des Schlusses vgl. oben zu Spruch 533.

799. Vgl. Spruch 1185.

800. Dieser Spruch erscheint auch im Garuḍa-P. mit der Variante नीचः st. खलः am Anfange; s. ÇKDr. u. परच्छिद्रं. Böhtl. — Ḱâṇ. VI, Çl. 21:

སྐྱེ་བོ་ངན་པ་གཞན་གྱི་སྐྱོན། །ཡུངས་འབྲུ་ཙམ་ལ་རྟོག་བྱེད་ཀྱི།
རང་སྐྱོན་བིལྦ་ཙམ་ཡང་ནི། །ཡོད་དུ་ཟིན་ཀྱང་མི་མཐོང་ངོ་།།

Der schlechte Mensch bemerkt fremde Gebrechen von der Grösse eines Senfkorns, die eigenen, wenn auch von der Grösse der Vilva-Frucht, sieht er nicht, wenn sie auch vorhanden sind. Sch.

818. Vgl. Galan. Varr. 191.

832. Auch MBh. 5,1127. Çârñg. Paddh. Nîti 29. *a*. *b*. lauten im MBh.: गन्धेन गावः पश्यन्ति वेदैः पश्यन्ति ब्राह्मणाः; in Çârñg. Paddh. wird st. *a*. *b*. *c*. gelesen: ज्ञानन्ति पशवो गन्धाद्वेदाज्ज्ञानन्ति बाडवाः । चराद्विदन्ति राजानः. Böhtl. — Mas. VI, Çl. 5:

དུད་འགྲོ་དྲི་ཡིས་མཐོང་བར་བྱེད། །རིག་བྱེད་ཀྱིས་ནི་བྲམ་ཟེ་མཐོང་།
སྨན་གྱི་རིག་པས་སྨན་པ་མཐོང་། །རྒྱལ་པོ་ཉན་རྣམས་མཐོང་བར་བྱེད།།

Das Thier sieht vermittelst des Geruchs, der Brahmane vermittelst des Veda, der Arzt vermittelst des Heil-Veda, der König vermittelst der Späher. Sch.

846. Nâg. Nîti Çl. 138:

དམ་པ་རིང་ན་གནས་གྱུར་ཀྱང་། །ཡོན་ཏན་པོ་ཉ་ཉིད་བྱེད་དེ།
ཀེ་ཏ་ཀ་ཡི་དྲི་བསྣམས་ནས། །བུང་བ་རང་ཉིད་འོང་བར་འགྱུར།།

Wenn der Treffliche auch weit wohnt, verrichtet die Tugend das Botenamt: die Bienen kommen von selbst, wenn sie den Duft der Ketakî gerochen haben.

Var. Çl. 6:

དམ་པ་རིང་ན་གནས་གྱུར་ཀྱང་། །པོ་ཉ་ཡོན་ཏན་ཉིད་བྱེད་དེ།
ཀེ་ཏ་ཀ་ཡི་དྲི་ཡིས་ནི། །བུང་བ་རང་བཞིན་འོང་བ་བཞིན།།

Wenn der Treffliche auch fern wohnt, macht die Tugend selbst den Boten, gleichwie durch den Duft der Ketakî die Bienen von selbst kommen. Offenbar ist *d*. corrumpirt und die Lesart *b*. schlechter.